THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

महान शिल्पकार की रूप–रेखाएं

Blueprints from the great architect

Author: Name withheld

The Christian Science Monitor/Monitor World 14-20 May, 2001

न्यूयार्क शहर में अम्पायर स्टेट बिल्डिंग 381 मीटर ऊँची है। कभी यह संसार की सबसे ऊँची इमारत थी, अब इसे ज्यादा ऊँची और जटिल इमारतों ने पीछे छोड़ दिया है। आजकल हम अंतरिक्ष में निर्माण करते हैं!

ऐसी उपलब्धिओं को क्या चीज़ सम्भव बनाती है?

डिज़ाइन। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि एक बड़े भवन का बिना डिज़ाइन के निर्माण किया जा रहा हो, बिना नक्शे के और बिना मार्गदर्शी नियमों के? यदि हम कोशिश करें तो हमें जल्दी ही पता चल जाएगा कि यह बिल्कुल नहीं किया जा सकता। किसी भी चीज का निर्माण करने में डिज़ाइन सफलता की कुंजी है।

हमारे ब्रह्माण्ड के डिज़ाइन के बारे में क्या कहेगें–इसकी अविश्वसनीय सुन्दरता और जटिलता के बारे में–और उस डिज़ाइन के बारे में जो हमारी अपनी जिंदगी का आधार है? यह कहाँ से आते है?

सदियों से बहुत से लोग इस प्रकार की बातों पर हैरान होती रहे हैं। कुछ ने उत्तर पाने के लिए भौतिक ब्रह्माण्ड के क्षेत्र के परे देखा। संसार के मुख्य धर्मो ने इसे समझा जिसे उन्होंने दिव्य योजना कहा।

बाइबल उन लोगों की ज़िन्दगियों के बारे में बताती है जिनके पास इस प्रकार की दिव्यदृष्टि थी। उदाहरण के लिए, लगभग 4000 साल पहले अब्राहम नाम के एक व्यक्ति को दृढ़विश्वास हुआ कि ब्रह्माण्ड का रचयिता ही हमारे अस्तित्व का वास्तविक स्त्रोत है और जो अपने डिज़ाइन के अनुसार जीवन का रहस्योद्घाटन कर रहा है। परिणामस्वरूप अब्राहम ने दिव्य योजना पर भरोसा किया और जिसने उसे उसकी जिन्दगी के प्रत्येक पहलू में सफलता प्राप्त करने के काबिल बनाया।

हम सब परमेश्वर* के महान डिज़ाइन के बोध के साथ जीवन में आगे बढ़ सकते है–एक डिज़ाइन जो हम में से प्रत्येक को सम्मिलित करता है–और वह उसके स्वाभाविक गुण के अनुसार होना चाहिए और जो उस अच्छाई को प्रकट करता है, जो उसके अनन्त प्रेम की अभिव्यक्ति है, उस ज्ञान तथा बुद्धिमता को जो दिव्य मन के विशेष गुणों का वर्णन करती है और दिव्य सिद्धांत की विश्वसनीयता और सर्व–विद्यमानता को।

जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मेरी बेकर एडी जिन्होंनें इस अखबार को प्रारंभ किया, लिखा ''मन वह शिल्पकार है जो अपने स्वयं के विचार का निर्माण करता है और सारे समन्वय को उत्पन्न करता है जो दिखाई देता है'' **(Miscellaneous Writing Page 41)**

जब कभी भी हमें कठिनाई का सामना करता पड़ता है–चाहे यह एक सेहत संबधी समस्या हो, एक आर्थिक मुश्किल, एक संबधों की समस्या – हम अपने आप से पूछ सकते है: '' क्या वह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है? क्या यह ब्रह्माण्ड के उसके डिज़ाइन के अनुसार है? क्या यह परमेश्वर, महान शिल्पकार, के स्वाभाविक रूप के साथ मेल खाता है?''

यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार का असमन्वय संभव रूप से परमेश्वर के महान डिज़ाइन का हिस्सा नहीं हो सकता। इसलिए परमेश्वर की रचना में और हमारे जीवन में इसकी कोई जगह नहीं होती।

क्यों कि केवल एक ही रचना है और यह परमेश्वर की अच्छाई, ज्ञान और समन्वय को प्रतिबिम्बित करती है, ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो किसी और वास्तविकता को उत्पन्न कर सके–बीमारी, गरीबी, दुःख, उदासी।

जब विचार हमारे रास्ते में कहते हुए आते हैं,''तुम बीमार हो और यह खतरनाक हो सकता है: तुम्हारी उम्र बढ़ रही है इसलिए तुम पूरी तरह स्वस्थ होने की उम्मीद नहीं कर सकते: तुम डरे हुए हो क्यों कि घटनाएं शायद तुम्हारे अनुसार न हों।'' इस के बजाए हम एकदम सोच सकते है,''यह परमेश्वर की योजना के अनुसार नही हैं–बीमारी दिव्य जीवन की सजीवता और ताकत को अभिव्यक्त नही करती: यह परमेश्वर की उसके ब्रह्माण्ड की रूप रेखा के अनुसार नहीं है–क्यों कि जो जीवन परमेश्वर मुझे देता है, सदा ताज़गी और सुन्दरता को प्रकट करता है। परमेश्वर ने मेरे लिए किसी तरह के डर या गुलामी की योजना नही बनाई, अपितु मुझे उसकी सर्व–विद्यमानता और उसके अनन्त प्रेम को जानने की खुशी दी है''

महान शिल्पकार के डिज़ाइन तथा योजना को समझने में महान आज़ादी है। परमेश्वर की योजना की परिभाषा बाइबल में इन शब्दों में दी है: ''दाता कहता है, मै उन बातों को जानता हूँ जो मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, कुशलता की बातें न कि विषमता की बातें न कि विषमता की, तम्हें एक अपेक्षित उज्जवल भविष्य देने के लिए'' (यिर्मयाह 29:11)

इस समझदारी में आनन्दित होते हुए हम आशा कर सकते हैं कि जो कुछ भी हम करते हैं, जो कुछ भी हम अनुभव करते हैं, जो कुछ भी हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, उसे दिव्य डिज़ाइन के अनुरूप ही होना है और हम अपने आप को दुबारा याद करवा सकते हैं कि हम सदा परमेश्वर की योजना में सम्मिलित हैं।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.